व्यापार किरण

वर्ष-4 अंक-6 सतना, माह मई 1999 पृष्ठ संख्या-12 मूल्य 10/-

बिजनेस हेल्थ

❖ डॉ नंदलाल तिवारी

कैंसर रोग की नई दवा

-हमारे संवाददाता-

सतना, मई। जैसा कि सर्वविदित है कि कैंसर एक भयावह बीमारी है। और यह एक लाइलाज रोग भी है। जिस किसी को भी यह रोग हो जाये तो मरीज और उसके परिजन निराशा की जिन्दगी जीने को विवश हो जाते हैं, मरीज और उसके परिजन की स्थिति यह हो जाती है कि वह तमाम आशंकाओं, कुशंकाओं के अथाह सागर में डूबने-उतराने लगते हैं, जैसा की माना जाता है और सिद्ध भी है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) के तमाम असाध्य रोगों का इलाज सन्निहित है, बस जरूरत है इन्हें ढूंढ निकालने की और ऐसा ही एक विलक्षण प्रयास किया है जयपुर के एक वैद्य डॉ. नंदलाल तिवारी ने। उन्होंने २०-२५ वर्षों की अनवरत साधना के बाद विभिन्न जड़ी-बूटियों के मिश्रण से कैंसर की अत्यंत प्रभावशाली और नायाब दवा इजाद की है। श्री तिवारी की मंशा इस रोग से पीड़ित मानव को पूर्णरूपेण स्वस्थ्य कर उसे नई जिन्दगी देने की सार्थक है। उन्होंने मंध्यप्रदेश की प्रगतिशील औद्योगिक नगरी सतना में रहने वाले लोगों की सुविधा व उन्हें सम्पूर्ण इलाज मुहैय्या कराने के लिये लोकप्रिय व्यापारिक समाचार पत्र व्यापार किरण के दफ्तर में एक पत्र भेजा है, जिसमें सतना वासियों के लिये तमाम इच्छायें जाहिर की गई हैं। पत्र में इस बात का भी उल्लेख है कि उनके द्वारा तैयार की गई आयुर्वेद दवाओं के सेवन से अनेक रोगी मौत के दरवाजे से जीवन के आंगन में लौट आए हैं। उन्होंने आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से तैयार अपनी दवाई का नाम कर्कटोल रखा है और राजस्थान सरकार से इसके निर्माण की बाकायदा इजाजत भी दी है। श्री तिवारी ने अपना एक आलेख भी भेजा है जिसे हमें हुबहू प्रकाशित भी कर रहे हैं।

आज पूरी दुनिया में कैंसर जैसे घातक व असाध्य रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिये कारगर औषधि की खोज की जा रही है, परन्तु दुर्भाग्यवश अभी तक किसी वैज्ञानिक को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चला है जिससे इस जानलेवा रोग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सके। डा. तिवारी ने १९६० से १९७२ तक और फिर १९६३ से १९७१ तक दार्जिलिंग के चाय बगानों में और जंगली वनस्पतियों पर गहन अध्ययन किया। जंगलों में औषधियों का भंडार है और आदिवासी लोग इस परंपरा का लाभ लेते रहे हैं। डा. तिवारी ने व्यवस्थित ढंग से नया आयाम दिया। उन्होंने काफी प्रयासों के बाद आठ वनस्पतियों का एक शुद्ध मिश्रण तैयार किया। इन औषधियों का केन्द्र सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त ग्रंथों में उल्लेख है, परन्तु यह प्रमाणित नहीं है कि इनका उपयोग कैंसर जैसे घातक रोग के लिए हो सकता है। इन्होंने इनका परीक्षण कर एक यौगिक तैयार किया और पहली बार एक जोंक के कैंसर के मरीज पर इसका परीक्षण किया। परीक्षण काफी हद तक सफल रहा और फिर जन कल्याण का सिलसिला चल पड़ा।

पिछले १५ वर्षों के दौरान भारत ही नहीं बल्कि अमरीका, इंग्लैण्ड, जर्मनी और कनाडा आदि देशों से उनके पास मरीज आने लगे। डा. तिवारी अब नियमित रूप से लंदन और अन्य बड़े विदेशी शहरों में जाकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं. लंदन की एक सामाजिक संस्था ने यहां आकर उनके काम पर फिल्म बनाई और लंदन के एक स्थानीय टीवी ने उन पर आधे घंटे का एक इंटरव्यू कार्यक्रम प्रसारित किया। लेकिन डा. तिवारी ने अपना पेटेंट विदेशों में नहीं दिया है वे इसे अपने देश को ही सौंपना चाहते हैं। डा. तिवारी के पास ९० प्रतिशत मरीज ऐसे आते हैं, जिन्हें हर तरह के इलाज के बाद अस्पतालों से यह कह कर लौटा दिया जाता है कि अब सिर्फ भगवान का नाम लो। डा. तिवरी का यह दावा कभी नहीं रहा कि इनकी दवा से सभी मरीज ठीक हो जायेंगे, लेकिन आखिरी स्टेज के ४०-५० प्रतिशत मरीजों को पूर्ण आराम मिला है। आधे मरीज ऐसे भी हैं जिन्हें आशानुरूप आराम नहीं मिला, लेकिन जहां ५ से १० प्रतिशत रोगियों को उन्नत इलाज के बाद लाभ हो रहा है वहां यह आंकड़ा काफी मायने रखता है।

डा. तिवारी का मानना है कि यदि इसके लक्षणों के आधार पर इलाज प्रारंभ कर दिया जाए तो सभी आखिरी स्टेज की तकलीफों से बचा जा सकता है।